Seventeenth Loksabha

>

Title: Request to declare Ruri village in Pratapgarh Parliamentary Constituency as tourist spot.

श्री संगम लाल गुप्ता (प्रतापगढ़) : सभापति महोदय, धन्यवाद ।

“मुझे न तन चाहिए, न धन चाहिए,
अमन से भरा यह वतन चाहिए ।
जब तक जिंदा हूं इस मातृभूमि के लिए,
और मरूं तो तिरंगा कफन चाहिए ।”

इस भावना से ओत-प्रोत होकर लोगों ने जंग-ए-आजादी की लड़ाई में शिरकत की । मुझे अफसोस होता है कि आजादी के 70 साल बीत जाने के बाद भी अपने को नेहरू जी का उत्तराधिकारी कहने वाले लोगों ने उनकी शानदार विरासत के लिए कुछ नहीं किया और वे कुछ कर दिखाने वाले मोदी जी पर तंज कसने में ही समय गंवाते हैं ।

महोदय, जनपद प्रतापगढ़ के अवध किसान आंदोलन के केन्द्र बिंदु रहे पट्टी तहसील के रूरे गांव में हजारों मील दूर महाराष्ट्र से आकर बाबा रामचन्द्र ने ही बेगारी के खिलाफ अलख जगाई, जिससे प्रभावित होकर वर्ष 1920 में देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित नेहरू जी ने पहली बार इलाहाबाद से पट्टी आकर 6 किलोमीटर पैदल चलकर रूरे गांव से अपना राजनीतिक सफर आरम्भ किया । इस बात का जिक्र उन्होंने अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इण्डिया में किया है, किंतु अफसोस है कि उनके बलबूते पर ही पीढ़ी दर पीढ़ी कांग्रेस ने राज किया है ।

मैं आपके माध्यम से आज मांग करता हूं कि किसान आंदोलन के केन्द्र बिंदु रहे पट्टी तहसील के रूरे गांव को राष्ट्रीय पर्यटक स्थल घोषित कर, उसे वर्तमान पीढ़ी के प्रेरणास्रोत स्थल के रूप में विकसित करते हुए आजादी के दीवाने बाबा

रामचंद्र, ठाकुर झिंगुरी सिंह आदि की भावनाओं को प्रेरणास्रोत बनाने की कृपा करें ।

माननीय सभापति : नियमानुसार किसी को अभी जाना नहीं है ।